सत्यमेव जयते

स्कूल शिक्षा विभाग–राजस्थान सरकार

(प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा)

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन
बाल केन्द्रित शिक्षण
सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

पढ़े चलो, बढ़े चलो
RASHTRIYA MADHYAMIK SHIKSHA ABHIYAN

सभी बच्चे पढ़ सकते हैं।
सभी शिक्षक पढ़ा सकते हैं।

मुख्य लक्ष्य

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

- विद्यार्थी केन्द्रित
- गतिविधि आधारित
- सीखने पर केन्द्रित
- आकलन का सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का ही अभिन्न अंग होना।

सभी बच्चों का सर्वांगीण विकास

सभी बच्चों की क्षमताओं का अधिकतम विकास

सुनिश्चित करना कि सभी बच्चे अपने आयु अनुरूप स्तर प्राप्त कर सकें।

सीसीई/सीसीपी के बारे में हमारी समझ

रूपरेखा के अति महत्वपूर्ण पक्ष

1. समतुल्य एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रत्येक बच्चे का प्रजातांत्रिक अधिकार है।
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार शिक्षा संरचनावादी (constructivist) और आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र पर आधारित होनी चाहिए।

हमारी मूल मान्यता

सभी बच्चे सीख सकते है यदि उन्हें उपयुक्त आकलन और सुधार हेतु उचित निर्देशन मिले।

वर्तमान परिदृश्य

- विभिन्न रिर्पोट्स के अनुसार शालाओं में सीखने का स्तर गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों रूपों में बहुत नीचे है।
- सभी बच्चों के लिए समान आकलन और शिक्षण का परिणाम कक्षा–कक्ष में एक बड़ा भेद पैदा कर देता है।
- कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं और आकलन के मध्य स्वाभाविक जुड़ाव का अभाव है।

सीसीई/सीसीपी का अभिप्राय

- बच्चों में विविधताएं जैसे समझ के स्तर, सीखने की शैलियाँ, रूचियाँ और सक्रियता के स्तरों के अन्तर को भरने में सीसीई की प्रक्रिया सहायता करेगी।
- सीसीई/सीसीपी के परिणामस्वरूप कक्षा में बच्चे अपने स्तर से सीखेंगे और उनकी आवश्यकता के आधार पर आकलित किए जा सकेंगे।
- पूरी कक्षा के बच्चों को समान स्तर पर लाने हेतु सीसीई/सीसीपी शिक्षक को शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं और विविध उपसमूह के लिए योजना बनाने हेतु निर्णय लेने में सहायक होगा।
- सीसीई/सीसीपी के परिणामस्वरूप बच्चों में सीखने के स्तर को और प्रेरित करने में सहायता मिलेगी।

आकलन/मूल्यांकन का मूलभूत बदलाव

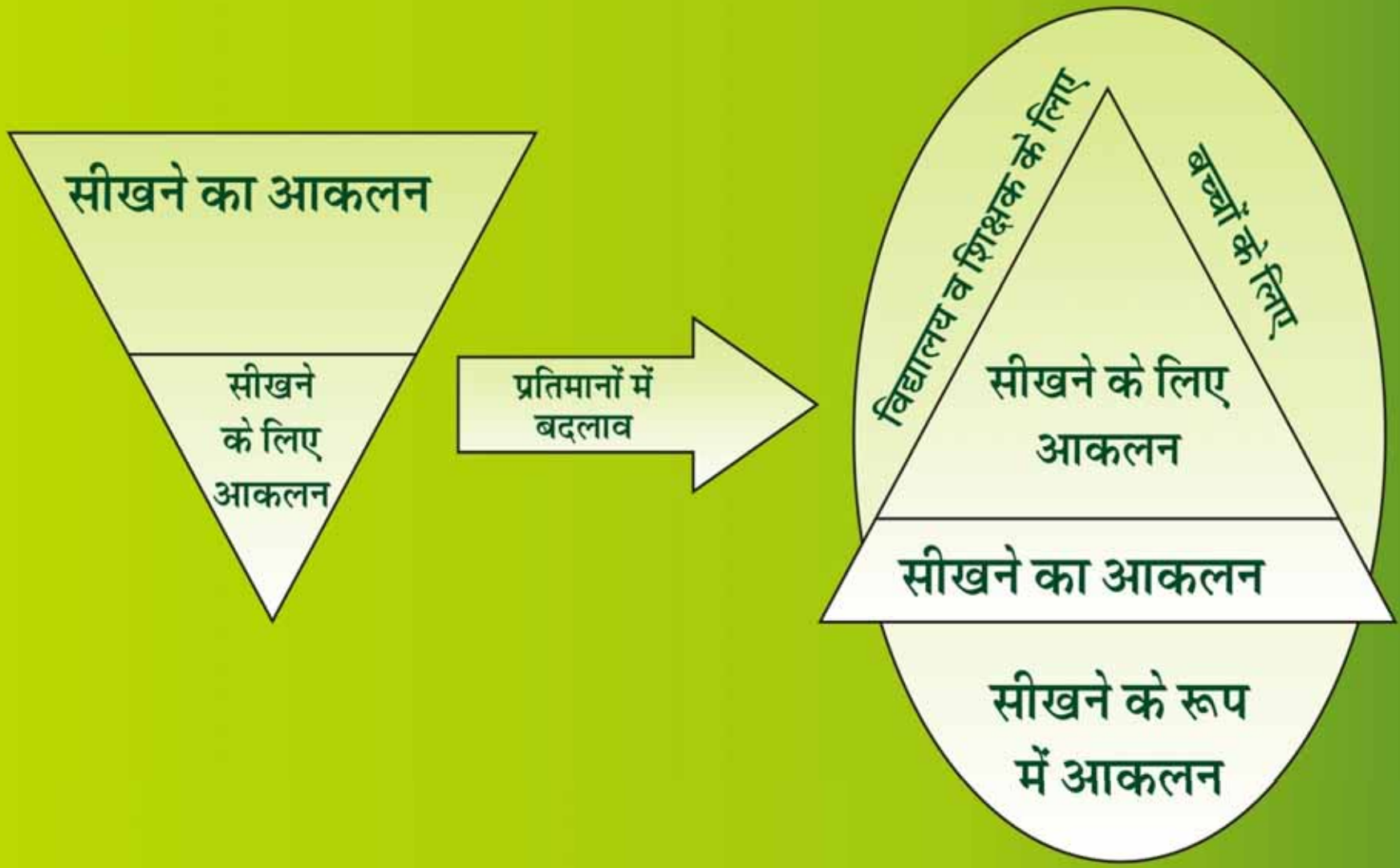

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन : प्रमुख मान्यताएं

- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई/सीसीपी) स्कूल-आधारित मूल्यांकन व्यवस्था
- एक ऐसी व्यवस्था जिसमें विद्यालय में बच्चों के विकास के सभी पहलुओं का आकलन
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गुणवत्तापूर्ण बनाना एवं मूल्यांकन का सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का आवश्यक घटक होना
- सतत प्रतिपुष्टि (फीडबैक) की उपयुक्त शिक्षण योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन वास्तव में सीखने सिखाने एवं कक्षा व्यवस्था में विशेष बदलाव के लिए प्रेरित करती है
- अभिभावक एवं समुदाय का बच्चों की शिक्षा के साथ जुड़ने का सशक्त माध्यम
- बच्चों के सीखने के स्तर के प्रमाणिक दस्तावेज एवं संस्थागत जिम्मेदारी का प्रभावी माध्यम

बाल केन्द्रित
शिक्षण
विद्यालय एवं समुदाय
समुदाय व बच्चों के साथ साझेदारी
सम्पूर्ण कक्षा
• सामूहिक चिन्तन
• ज्ञान का परिष्कार
• प्रक्रिया का अधिसंज्ञान
जोड़े में (PEER GROUP)
• प्रत्यक्ष समर्थन
• उपसमूहों में सीखना
• भूमिका एवं उत्तरदायित्व
• सहानुभूति/समानुभूति
• सहयोग
बच्चा व्यक्ति के रूप में
• अभिवृत्ति
• मनो–सामाजिक
• संज्ञानात्मक
• अभिप्रेरणा
• स्व का अधिसंज्ञान
• सह–शिक्षाक्रमणीय
वांछित परिणामों के प्रति जिम्मेदाराना दृष्टिकोण
शिक्षकों के बीच साझेदारी
सीखने के अनुरूप वातावरण

राजस्थान सीसीई/सीसीपी प्रक्रिया

राजस्थान में सीसीई/सीसीपी प्रक्रिया : मुख्य बिन्दु

- पूरे सत्र को चार टर्म में विभाजित किया गया है।
- पाठ्यक्रम में दिए गए उद्देश्यों एवं बच्चों के स्तर के अनुरूप गतिविधि आधारित शिक्षण योजना निर्माण का प्रावधान।
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को पाठ्यक्रम में दिए गए उद्देश्यों से जोड़ना।
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों के आधार पर बच्चों की प्रगति को रचनात्मक मूल्यांकन के रूप में निरंतर दर्ज करना।
- रचनात्मक मूल्यांकन के आधार पर शिक्षण योजना की समीक्षा करना।
- वर्ष चार बार टर्म के अन्त में रचनात्मक मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए योगात्मक मूल्यांकन दर्ज करना।
- परम्परागत विषयों के साथ-साथ कला, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा एवं व्यक्तिगत अभिवृति का भी मूल्यांकन करना।

पाठ्यक्रम आधारित अधिगम उद्देश्यों की टर्म विभाजन प्रक्रिया

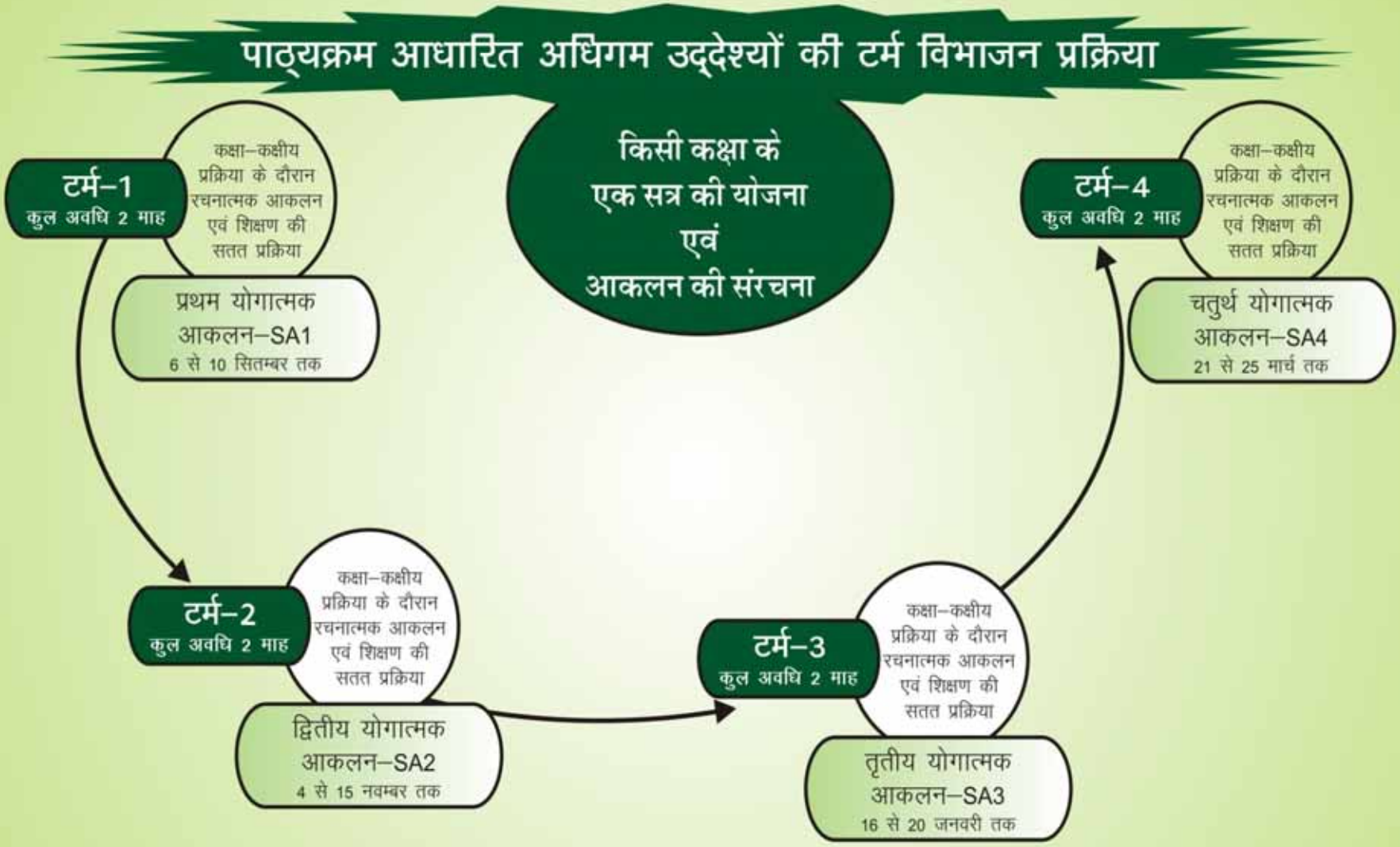

कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में सभी बच्चों का सत्र आरम्भ में हिन्दी एवं गणित विषय के अन्तर्गत आधार रेखा मूल्यांकन किया जाना है, जिसके आधार पर बच्चों के सही कक्षा स्तर चिन्हित किए जाएंगे।

पाठ्यक्रम आधारित अधिगम उद्देश्यों के टर्म विभाजन के फायदे

- राजकीय शालाओं में कक्षाओं की स्थिति बहुकक्षीय अथवा बहुस्तरीय होती है जिसे शिक्षण से पूर्व आधार रेखा आकलन से जाँचकर पता किया जाता है।
- अध्यापक योजना डायरी (पाठ्यक्रम आधारित अधिगम उद्देश्यों का टर्मवार विभाजन) एक विशेष पाठ्यक्रमणीय पैकेज है जो कि बहुस्तरीय एवं बहुकक्षीय के सन्दर्भ में बच्चों की विशेष जरूरतों को पूरा करता है। इसके द्वारा कक्षा के सभी बच्चों को उनके स्तरानुसार कार्य करवाते हुए।
- यह प्रक्रिया विद्यार्थी को सत्र के दौरान किसी भी समय आगे के स्तर पर बढ़ाने की सुविधा प्रदान करती है जबकि विद्यार्थी किसी भी टर्म के अधिगम उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर लेता है।
- टर्म संरचना सतत उपचारात्मक शिक्षण की सुविधा प्रदान करती है तथा पूरे एक वर्ष की विषयवस्तु को याद रखने के दबाव को कम करती है।

सीसीई/सीसीपी - प्रक्रिया चक्र के रूप में

सीसीई/सीसीपी प्रक्रिया के कई घटक हैं जो एक साथ मिलकर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और विद्यार्थी की उपलब्धियों व अभिप्रेरणाओं पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
(प्रत्येक टर्म के अन्तर्गत रचनात्मक शिक्षण एवं आकलन प्रक्रिया)

योजना

- इकाई/पाठ/थीम की योजना का प्रारूप
  (10 से 15 दिवसीय योजना का प्रारूप)
- समीक्षा योजना का प्रारूप

सीखने के प्रमाण संकलित करना

1. औपचारिक अवलोकन/अध्यापक योजना डायरी
2. पोर्टफोलियो- आकलन कार्य-पत्रकों, सीखने के चरणों, सीखने की शैली, दक्षता स्तर प्राप्ति के नमूनों का व्यवस्थित संकलन।
3. मौखिक प्रश्नोत्तर
4. अनौपचारिक अवलोकन- शाला प्राँगण से बाहर की गतिविधियाँ आदि।

प्रमाणों का मूल्यांकन

1. व्याख्याएँ
2. निरपेक्ष भाव- पूर्वधारणा रहित

बच्चों को फीडबैक देना

1. कार्य-पत्रकों व प्रगति पत्रकों पर लिखित टिप्पणियों के रूप में
2. कक्षा-कक्षीय संवाद के दौरान मौखिक फीडबैक देना
3. योगात्मक आकलन द्वारा

आगामी योजना हेतु समीक्षा एवं चिंतन

1. अनुभवों को नोट करना
2. विद्यार्थियों का विस्तृत अवलोकन दर्ज़ करना
3. योजना में आवश्यकतानुसार मध्यावति परिवर्तन
4. आगामी योजना निर्मित करना

पाठ्यक्रम आधारित अधिगम उद्देश्यों का विवरण

उदाहरण : कक्षा-2 ; टर्म प्रथम

क्रम संख्या	अधिगम क्षेत्र	पाठ्यक्रम आधारित अधिगम उद्देश्य एवं कार्य	राज्य पाठ्यपुस्तक में पाठ संदर्भ	
			पाठ	पृष्ठ संख्या
1	आकृति एवं स्थान की समझ	• लम्बे व छोटे का अनुमान लगा सकें तथा दी गई आकृति से बड़ी, लम्बी व छोटी आकृति समझकर बना सकें। • त्रिआयामी आकार वाली चीज़ों में से ड्रम, सन्दूक तथा गेंद जैसी आकृतियों को पहचानने एवं खिसकने - लुढ़कने के आधार पर वर्गीकृत कर सकें। • त्रिआयामी चीज़ों से ट्रेस करके द्विआयामी आकृतियाँ बना सकें। • वृत्त, चौकोर, तिकोनी चीज़ों को अपने आस- पास एवं चित्रों में पहचान सकें। वृत्त, चौकोर, तिकोनी चीज़ों से चित्र बना सकें एवं इन आकृतियों के किनारे पहचान तथा गिन सकें। • सीधी व घुमावदार रेखाएं बना सकें। • स्थानिक सम्बन्धों से जुड़ी शब्दावली के विकास हेतु चर्चा कर सकें, जैसे चित्र में कौन कहाँ है।	1, 5, 6 व 7	1-6, 15-26
2	संख्या ज्ञान की समझ	• 1 से 20 तक गिनने, पहचानने, लिखने तथा मात्राबोध की समझ बना सकें। • 10 की समझ एवं 5-5 व 10-10 के समूह बनाकर गिन सकें। जैसे 5, 10, 15, 20 ..... एवं 10, 20, 30, 40 आदि बोलते हुए गिन पाना। • परिवेशीय संदर्भों में शून्य की स्थिति को समझ सकें।	2, 3, 4 व 9	7-14, 33-35
3	संक्रियाओं की समझ	• इकाई में इकाई एवं दहाई में दहाई का जोड़ना एवं घटाना ठोस, चित्र व प्रतीकों से समझकर कर सकें। (योगफल इकाई व दहाई दोनों में हो) • किसी संख्या को अलग- अलग तरीके से योजन-खण्डों (संख्याओं के जोड़ों) के रूप में निरूपित कर सकें।	7 व 8	27-32

उदाहरण

शिक्षण - आकलन योजना

पाठ/अवधारणा/थीम .... सम्पूर्ण कक्षा के लिए शिक्षण–आकलन योजना	दिनांक ....से ....तक

सम्पूर्ण कक्षा के लिए अधिगम उद्देश्य : ....

सम्पूर्ण कक्षा के लिए शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना
समूह–एक के लिए क्षमता संवर्धन हेतु योजना	

II. समूह–2 के लिए आवश्यकतानुसार अतिरिक्त शिक्षण–आकलन योजना

समूह–2 के लिए विशेष अधिगम उद्देश्य : ....

शिक्षण योजना (1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)	सतत आकलन योजना

शिक्षण - आकलन योजना

1. शिक्षण आकलन योजना पत्रक में 'अधिगम-इकाई की सावधिक योजना (10-15 दिवस हेतु) बनाई जानी है।
2. प्रथम योजना प्रारूप में सम्पूर्ण कक्षा सभी बच्चों के साथ सामूहिक, समूहों में एवं व्यक्तिगत कार्य नियोजन एवं द्वितीय योजना प्रारूप में कक्षा स्तर से पीछे चल रहे बच्चों के साथ सामूहिक, उप-समूह में एवं व्यक्तिगत कार्य का नियोजन प्रावधान।
3. शिक्षक द्वारा उपसमूहों का निर्धारण करना जिससे कि भिन्न-भिन्न विद्यार्थी की विविध आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण-आकलन योजना बनाई जा सके।
4. अधिगम उद्देश्यों उनके सापेक्ष आकलन के सूचकों एवं आकलन प्रक्रिया का निर्धारण किया जा सके।
5. विद्यार्थियों की समझ, रुचियों, सीखने की शैलियों के अनुसार शिक्षण हेतु रचनात्मक गतिविधियों और शिक्षण सामग्री का चयन किया जा सके।
6. दैनिक पाठ योजना और सतत अवलोकन एवं आकलन हेतु शिक्षक एक साधारण नोटबुक का प्रयोग करेंगे

शिक्षण - आकलन योजना की समीक्षा

शिक्षण योजना की समीक्षा: सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान आई समस्या, समाधान एव उपलब्धि के सन्दर्भ में

साप्ताहिक : समयान्तराल _____ से _____ तक	पाक्षिक : समयान्तराल _____ से _____ तक
बच्चों की सहभागिता, सीखने-सिखाने में आई कठिनाई एवं योजना में आवश्यक बदलाव के बारे में :-	बच्चों की सहभागिता, सीखने-सिखाने में आई कठिनाई एवं अधिगम उपलब्धि के बारे में :-

शिक्षण-आकलन योजना की समीक्षा

1. शिक्षक द्वारा अपने अनुभवों को दर्ज़ करना।
2. अवलोकन एवं अनुभव के आधार पर आगामी योजना में आवश्यक बदलाव के संकेत दर्ज़ करना।
3. व्यवस्थित समीक्षा हेतु प्रश्नों के सापेक्ष अवलोकन एवं अनुभवों को दर्ज़ करने का प्रावधान।

टर्मवार सतत रचनात्मक आकलन की स्थिति

अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन सूचक	आवृत्ति	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
आकृति एवं स्थान की समझ																															
परिवेशीय चीज़ों एवं उनके चित्रों में सममति आकृति को पहचानना एवं सममिति की समझ बना पाना।	I																														
	II																														
संख्या ज्ञान की समझ																															
1 से 500 तक की संख्याओं को पहचान पाना एवं संख्या रेखा पर निरूपित कर पाना।	I																														
	II																														
स्थानीय मान की समझ के आधार पर तीन अंकों तक की संख्याओं का निरूपण कर पाना, विस्तारित रूप में लिख पाना, संख्या पढ़ पाना और तुलना कर पाना।	I																														
	II																														
ठोस में इकाई, दहाई व सैंकड़े को समझते हुए सैंकड़े तक की संख्या का अनुमान लगा पाना एवं निरूपण कर पाना।	I																														
	II																														
संक्रियाओं की समझ																															
दो एवं तीन अंकों तक की संख्याओं का बिना हाँसिल व हाँसिल का जोड़ना स्थानीय मान के तर्क को समझते हुए मानक प्रचलित कलन विधि से कर पाना।	I																														
	II																														
दो एवं तीन अंकों तक की संख्याओं का बिना उधार व उधार का घटाना स्थानीय मान के तर्क को समझते हुए मानक प्रचलित कलन विधि से कर पाना।	I																														
	II																														
हाँसिल के जोड़ पर आधारित इबारती प्रश्नों की इबारत पढ़कर व सुनकर संक्रिया को हल कर पाना।	I																														
	II																														
उधार के घटाने पर आधारित इबारती प्रश्नों की इबारत पढ़कर व सुनकर संक्रिया को हल कर पाना।	I																														
	II																														

पूर्व कक्षा के सम्बन्धित बुनियादी दक्षताओं के सापेक्ष समेकित रचनात्मक आकलन

कक्षा – 1 विद्यार्थियों के रोल नम्बर → *संख्या ज्ञान एवं **संक्रियाओं के सूचक	टर्म																														
* 1 से 50 तक संख्या नाम सुनकर और संख्या पढ़कर चीज़ों की मात्रा गिनकर बता पाना।	I																														
	II																														
	III																														
	IV																														
1 से 50 तक संख्या नाम सुनकर एवं चीज़ों को गिनकर संख्या लिख पाना।	I																														
	II																														
	III																														
	IV																														
1 से 20 तक संख्याओं में क्रम को ध्यान में रखकर छोटी–बड़ी, ठीक–पहले, ठीक–बाद की संख्या बता पाना।	I																														
	II																														
	III																														
	IV																														
** दहाई की संख्या में इकाई की संख्या का बिना हँसिल का जोड़ मौखिक व लिखित हल कर पाना।	I																														
	II																														
	III																														
	IV																														

कक्षा–कक्ष में चल रही प्रक्रिया के आधार पर योजनाबद्ध अवलोकन दर्ज़ करना।

यह शिक्षक की प्रतिदिन की समीक्षा एवं योजना में आवश्यक बदलाव करने में सुविधा प्रदान करती है।

इसमें किसी एक सूचक के सापेक्ष विद्यार्थी के अवलोकन को एक से अधिक बार दर्ज़ करने का प्रावधान है।

A = स्वतंत्र रुप से कार्य कर पाना या अपेक्षित स्तर की समझ / दक्षता होना ;

B = शिक्षक की सहायता से कार्य कर पाना या मध्यम स्तर की समझ / दक्षता होना तथा

C = शिक्षक की विशेष सहायता से कार्य कर पाना या आरम्भिक स्तर की समझ / दक्षता होना है।

रचनात्मक आकलन हेतु ग्रेड का निर्धारण बच्चों के साथ किए गए कार्य के सतत अवलोकन, फोर्टफोलियो, कक्षा कार्य, गृहकार्य एवं प्रोजेक्ट कार्य में रही शैक्षिक स्थिति के आधार पर किया जाएगा।

योगात्मक आकलन : नमूना पत्र

सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख	विद्यार्थी क्रमांक	नाम :	नामांकित कक्षा : ....
		आधार रेखा/पदस्थापन मूल्यांकन से प्राप्त कक्षा स्तर : हिंदी ...., गणित ...., अंग्रेजी	

1.हिन्दी अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन बिन्दु		ग्रेड			
		SA-1	SA-2	SA-3	SA-4
सुनकर समझना और समझकर बोलना	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच संबंध बनाते हुए अपनी बात को सहज रूप से कह पाना। (कक्षा 1 व 2)					
बोलने में पहल और आत्मविश्वास के साथ स्वयं की बात को रख पाना।	1-2 ☐ 3-5 ☐				
कक्षा–कक्ष में हो रही चर्चा में भाग लेना।	1-2 ☐ 3-5 ☐				
दूसरे के विचारों को सुनने के लिए उत्साहित होना और सुनकर उचित प्रतिक्रिया दे पाना। (कक्षा 3 से 5)					
सुनकर समझना और अपनी प्रतिक्रिया तार्किक ढंग से आत्मविश्वास के साथ व्यक्त कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
भाषा के सौंदर्य की सराहना करने की योग्यता का विकास कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
वस्तुस्थिति को समझना एवं विश्लेषण कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
पढ़ना और पढ़कर समझना	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों और छपी हुई लिखित सामग्री को पढ़ने के लिए उत्सुक होना।	1-2 ☐ 3-5 ☐				

अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष आकलन बिन्दु		ग्रेड			
		SA-1	SA-2	SA-3	SA-4
लिखना					
विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में आने वाले प्रश्नों जैसे –क्या, क्यों, कौन, कैसे...... के उत्तर तार्किकता के साथ लिख पाना। (कक्षा 3 से 5)					
किसी परिचित संदर्भ/विषयवस्तु/चित्र पर स्पष्टता के साथ मानक शब्दावली व विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए 8–10 वाक्य लिख पाना। (कक्षा 3 से 5)					
पढ़े गए संवाद को कहानी के रूप में स्वयं के स्तर पर लिख पाना। (कक्षा 3 से 5)					
पहेलियों, लोकोक्तियों, लोककथाओं को खोजकर लेखन कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
चित्रों एवं विषयवस्तु के आधार पर कहानी का सृजन कर पाना। (कक्षा 3 से 5)					
पढ़े गए पत्रों के आधार पर उचित प्रारूप में स्वयं पत्र लिख पाना। (कक्षा 3 से 5)					
व्यवहारिक व्याकरण (कक्षा 3 से 5 तक)	कक्षा स्तर				
	समेकित ग्रेड				
संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण की पहचान कर पाना।					
वाक्यों में कारक चिह्नों की उपयुक्तता को समझ पाना एवं सही कारकों का उपयोग करते हुए वाक्य संरचना करना।					
समानार्थी शब्दों को समझना एवं अपनी भाषा में प्रयोग भी कर पाना।					
वचन, पर्यायवाची एवं विपरीतार्थक शब्दों को संदर्भ के अनुसार प्रयोग कर पाना।					

योगात्मक मूल्यांकन (सत्र के अन्त में)

योगात्मक आकलन का ग्रेड निम्नलिखित के आधार पर निर्धारित किया जाएगा –

- रचनात्मक आकलन चैकलिस्ट
- योगात्मक मूल्यांकन टूल/कार्य पत्रक।
- चारों योगात्मक मूल्यांकन में सीखने के क्षेत्रों अथवा कौशलों के सापेक्ष ग्रेड रचनात्मक आकलन में दी गई व्याख्या के अनुसार होंगी।

A = स्वतंत्र रुप से कार्य कर पाना या अपेक्षित स्तर की समझ/दक्षता होना ;
B = शिक्षक की सहायता से कार्य कर पाना या मध्यम स्तर की समझ/दक्षता होना तथा
C = शिक्षक की विशेष सहायता से कार्य कर पाना या आरम्भिक स्तर की समझ/दक्षता होना है।

रचनात्मक आकलन हेतु ग्रेड का निर्धारण बच्चों के साथ किए गए कार्य के सतत अवलोकन, फोर्टफोलियो, कक्षा कार्य, गृहकार्य एवं प्रोजेक्ट कार्य में रही शैक्षिक स्थिति के आधार पर किया जाएगा।

- प्रत्येक सत्र में दो बार विद्यार्थियों और अभिभावकों से फीडबैक प्राप्त करना।
- किसी स्तर के अधिकांश सूचकों के सापेक्ष दक्षता अथवा कौशल अर्जित करने पर प्रोन्नत करना।

विद्यार्थी वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन

2. गणित (अधिगम उद्देश्य; आकलन बिन्दु)	प्रथम टर्म कक्षा स्तर	SA-1 ग्रेड	द्वितीय टर्म कक्षा स्तर	SA-2 ग्रेड	तृतीय टर्म कक्षा स्तर	SA-3 ग्रेड	चतुर्थ टर्म कक्षा स्तर	SA-4 ग्रेड
आकृति एवं स्थान की समझ								
संख्या ज्ञान की समझ								
संक्रियाओं की समझ								
मापन की समझ								
आँकड़ों का प्रबन्धन एवं पैटर्न								
गणितीय तर्कशीलता एवं अधिसंज्ञान	–	–			–	–		
गणितीय संप्रेषण एवं अभिव्यक्ति	–	–			–	–		
गणित के प्रति रुझान	–	–			–	–		

नोट : **SA-1, SA-2, SA-3 & SA-4** का तात्पर्य क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ योगात्मक आकलन से है।

- **प्रत्येक विद्यार्थी हेतु ग्रेड, आकलन कथन एवं प्रतिपुष्टि टिप्पणी तथा रुचि एवं संलग्नता सहित चारों योगात्मक आकलन का समेकित रिपोर्ट कार्ड।**
- **विद्यार्थी वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन सतत एवं व्यापक आकलन अभिलेख में दर्ज़ समेकित ग्रेड की मदद से तैयार किया जाएगा।**
- **इसमें भी ग्रेड की व्याख्या पूर्व दस्तावेज़ों के अनुसार रहेंगी तथा बच्चों के काम करने का स्तर भी दर्ज़ किया जाएगा।**

एसआईक्यूई के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर दी जाने वाली सामग्री

- विषयवार पाठ्यक्रम एवं टर्मवार अधिगम उद्देश्य पुस्तिका : कक्षा 1 से 5 तक
- अध्यापक योजना डायरी
  - विषयवार एवं कक्षावार
  - कक्षा 1 एवं 2 : हिन्दी, अंग्रेजी एवं गणित (3)
  - कक्षा 3 से 5 : हिन्दी, अंग्रेजी एवं गणित एवं पर्यावरण अध्ययन (4)
  - इसके अन्तर्गत निम्नांकित अवयव/प्रारूप सम्मिलित हैं –
    - बच्चों के नाम लिखने का स्तर
    - योजना डायरी प्रयोग करने के निर्देश।
    - योजना प्रारूप
    - समीक्षा प्रारूप
    - आकलन चैकलिस्ट
    - मूल क्षमताओं की चैकलिस्ट

लगातार....2

- आकलन अभिलेख पंजिका
  - प्रति विद्यार्थी एक शीट
  - 50 बच्चों हेतु प्रावधान (बच्चों के नामांकन के अनुसार संख्याओं का निर्धारण)
  - सत्र के आरम्भ एवं प्रत्येक योगात्मक आकलन पश्चात आकलन दर्ज किया जाएगा।
- रिपोर्ट कार्ड
  - प्रति विद्यार्थी एक कार्ड
- स्रोत पुस्तिकाएं
  - स्रोत पुस्तिका-1 : हिन्दी, पर्यावरण अध्ययन, कला एवं शारीरिक शिक्षा
  - स्रोत पुस्तिका-2 : गणित एवं अंग्रेजी

धन्यवाद